सीता माता की आरती

आरती श्री जनक दुलारी की |

सीता जी रघुवर प्यारी की ||

जगत जननी जग की विस्तारिणी,

नित्य सत्य साकेत विहारिणी,

परम दयामयी दिनोधारिणी,

सीता मैया भक्तन हितकारी की ||

आरती श्री जनक दुलारी की |

सीता जी रघुवर प्यारी की ||

सती श्रोमणि पति हित कारिणी,

पति सेवा वित्त वन वन चारिणी,

पति हित पति वियोग स्वीकारिणी,

त्याग धर्म मूर्ति धरी की ||

आरती श्री जनक दुलारी की |

सीता जी रघुवर प्यारी की ||

विमल कीर्ति सब लोकन छाई,

नाम लेत पवन मति आई,

सुमीरात काटत कष्ट दुख दाई,

शरणागत जन भय हरी की ||

आरती श्री जनक दुलारी की |

सीता जी रघुवर प्यारी की ||